जो आज नहीं हैं, पर भुलाये नहीं जा सकते

NATIONAL INSTITUTE OF HYDROLOGY
ROORKEE-247667 (U.P.)

"कालो हि दुरत्यमः" अर्थात् काल से पार नहीं जाया जा सकता। यह कहा जाता है कि परत्याग और बलिदान की भावना से किये गये सुकर्म और उनके कर्ता की ख्याति को नमन करके समय आगे बढ़ जाता है, ख्याति का ग्रास नहीं होता। राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान के इतिहास की परिधि में एवं इसके सदस्यों के मन की धरा पर कुछ ऐसे व्यक्तियों के नाम अमर रहेंगे, जो ऐसी ही अक्षुण्य ख्याति के स्वामी थे। वे इस वर्ष हम सबको अकेला छोड़कर जीवन के अन्तिम सत्य की ओर अग्रसर हो गये। संस्थान का शोकाकुल परिवार उन्हें आदर पूर्वक नमन कर भावभीन श्रद्धांजली समर्पित करता है। हमारे बिछुड़े सहकर्मियों का संक्षिप्त परिचय निम्नानुसार है:

श्री एस. पी. सिंह

श्री एस. पी. सिंह ने इस संस्थान में दिनांक 5.7.83 को अवर श्रेणी लिपिक के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। वे दिनांक ~~1.7.96~~ 17.5.93 को उच्च श्रेणी लिपिक के पद पर पदोन्नत हुए। लिपिक के रुप में उनका कार्य सराहनीय रहा एवं उन्होंने सदैव अन्य कर्मचारियों के साथ मिलजुल कर कार्य किया। बिमारी के कारण दिनांक 3.3.96 को उनका स्वर्गवास हो गया । संस्थान को उनके निधन से हुई क्षति को कभी पूरा नहीं किया जा सकता।

डा. दिव्या

डा. दिव्या ने इस संस्थान में वैज्ञानिक "बी" के पद पर दिनांक 12.08.88 को कार्यभार ग्रहण किया। अभूतपूर्व प्रतिभा के कारण इन्हें दिनांक 12.08.93 को वैज्ञानिक "सी" के पद पर पदोन्नत किया गया। संस्थान में अपने कार्यकाल के दौरान शोध कार्यों के अतिरिक्त इन्होंने हिंदी की प्रगति में विशेष योगदान दिया। दिनांक 24.03.96 को सड़क दुर्घटना में उनका असामयिक निधन हो गया एवं इस प्रकार से वे हम सभी का साथ छोड़ गई। यह संस्थान उनके योगदान को कभी भुला नहीं सकेगा।

श्री पूरण चन्द्र

श्री पूरणचन्द्र ने इस संस्थान में चौकीदार के पद पर दिनांक 17.10.79 को कार्यभार ग्रहण किया। इन्होंने चौकीदार के पद पर अपने कर्तव्य को सदैव निष्ठापूर्वक निभाया एवं साथी कर्मचारियों से इनका व्यवहार एवं सहयोग बहुत सराहनीय रहा। लंबी बिमारी के कारण दिनांक 02.04.96 को इनका स्वर्गवास हो गया। इनके निधन से संस्थान ने एक कमर्ठ कर्मचारी को खोया, जिसकी कमी सदैव संस्थान को महसूस होती रहेगी।

वे आज हमारे बीच नहीं पर इस संस्थान के इतिहास पर उनका नाम अव्यक्त लिपि में सदा उत्कीर्ण रहेगा।

"मृत्यु में आतंक नहीं होता, बल्कि मृत्यु तो एक प्रसन्नता पूर्ण निद्रा है जिसके पश्चात् नये जागरण का आगमन होता है।"

- महात्मा गांधी